

१- दासी-२ वो लो किसानो मे उदासी का है।  
जमा जाते समय आज वो लक्षण की शिक्षा पायी है।

पुनः  
है शुभलक्षण राम लख मेरे, भोहमाल भगत हो कुशल है।  
तेरी दशा देख मुझको, दिखलाता वडा कुलक्षण है।

२- वाला पगली इस वार के लिये लगे इतना बडा ठोंग रचा था है।  
मोद गुहारा कथन सत्य है कि वल राम का राज्य  
तिलक होगा, तो लो इस शुभ संवाद के उपलक्ष्य में मैं  
मुझे मठ माला मेरे में दे रही हूँ।

३- कुवरी कुवरी हो स्वरदार, वडा जब जवान खोलना नही  
जागे मोद किसी वार कही हो जग मे तेरी स्वर नही  
इस मौते उगव घर मे कागडा फैलाने की लवार कही  
तो जोभ तुम्हारी खिचवा लूँगी, इसमें है सन्देह नही  
वह दिन कितना सुन्दर होगा, जिस समय राम राजा होगे  
शत्रुघ्न, लक्ष्मण भ्रातादि के भ्राता, उनके सेक होगे  
श्री रामचन्द्र सब भ्राताओं को एक सभा देखते है।  
पर सबसे बडे करके वे मुझे अपनी मातु समझाते है।  
उस परम पिता परमेश्वर से, वडा यही साधना है मेरी  
दुसरे जन्म मे राम पुत्र व मिथा पौतो हूँ हो मेरी  
पाँवो से प्रिय राम रामचन्द्र, उनके आगे मेरे में दूतावत है।  
तुमको है भ्रात सपथ दासी, वो लो तेरा लक्षण मेसा

मन्यो-सम-श्वताओ, आखिर काम आह, मेरी समझ मे कुछ नही आता है।  
मन्यो-हमे भी जाल हो रहा है कि तुम्हारी वही सत्य  
है कारण कि मेरी सोहनी आँख फडका जाती है  
जो मे से जाना लख-२ के कुसपे देखे  
गती है जो जल मे किसी का मन मल  
नही किया कि मेरी विद्या मुझे इसी  
विषय दिखे। लो मे ने हर मे पाता अपना  
जीवन समझ कर लूँगी, किन्तु सोत की  
सेवना नहीं करूँगी



6) दोस्रो में तुम्हारा अकार कभी नहीं भूलूँगी तुम्हारे कहे पर मैं  
कुँरे में गिर सकती हूँ कल्पे पुत्र कोर पाते को त्याग सकती हूँ  
वताओं आव में क्या करें।

7- मन्थरा तुम्हारे समान संसार में मेरा कोई हित ही नहीं है  
तुने इतने दुःख को सहारा दिया, वताओं अब तुझे क्या  
करवा है जब जैसा तुय कहोगी वैसा कहूँगी। यदि मेरी उच्छा  
कल घूरी हो गयी हो तो मैं तुम्हारे कुपर को सोने में  
मिदवा दूँगी।

8- माँगी - माँगी कहते हो लिय, पर कभी न मुझको कुछ देते  
हो वर जो पहले दे डाले, उसमें ही है शोक मुझको  
वारा। प्राण नाथ आपका स्वभाव हो गया हो गया है कि  
आप माँगी - 2 कहते हो, किन्तु कभी कुछ देते नहीं हो  
हमारे जो दो करदान बने हैं, उन्हें को पाने में मुझे संदेह  
है।

9) राजा मुझको विश्वास न हो, जिससे वरदान माँग लें।  
यदि देना है मुझको तो, फिर सपथ राम की कर लें।

10) हे प्राणेश्वर बलिहारी है, जब तो विश्वास हुआ मुझको  
आपने दोनो वर माँगी हैं। जिनके अभिलाषा है मुझको हमको  
पहले बर में तो राज तिलक, श्री भरत लाल जो को दीर्घ  
दूसरी माँग इस दासी को, समया धीरज धर भुल लीजें  
राजसी वेध तज राम-चन्द्र, तपसी का वेध बना लें  
चौदह वर्षों को त्याग आवध, वन जाकर कठोर साधनावासी होंगे

11- क्यों महाराज जब मौन हुये, कुछ तो उत्तर देना ही है।  
क्या मन में यह सोचे थे कि, माँगी जाज चंवेना है  
- क्या भरत आपका पुत्र नहीं, क्या हमें मोल ले आये हो  
क्या इसी कार्य पर रघुवंश, द्वात्रिंश कहलाये हो।  
शिव, दक्षिण, बलि, होश्रचन्द्र, जो कुछ मुख कह डाले  
फिर कभी बात से डिगे नहीं, वर आपने प्राण गवाँ डाले  
अब तो यह ही रस्ता है, या तो दोनो वर दीजें



अथवा अपना गुह से राजा स्वयं नहीं होकर करना कीजै

12- वाली महाराज आप करोड़ो उपाय करिये किंतु यहाँ अब आप को माया न लगेगी या तो आप मेरे गाँव डूबे वरदान को प्रतिक्रिया में, अथवा इन्कार करके चलें लीजें जिस प्रकार की शिक्षा ने मेरा उन भय सोचा था उसी प्रकार का फल मैं, उसे अवश्य दूँगी  
ये हा ! - होत प्रात मुने भेष धारि, जो न राम वन जाहि मोर मरण राउर आपस नृप समुझीह मन भारि

13- महाराज यदि आपके मन में यही बात रही हो तो फिर आपने जिसके वल पर गाँव लो - गाँव लो कहते रहे हैं ठह्रा मारकर हँसना और छरिझाना दोनों एक ही बात साध नहीं हो सकती है। अब आप नारियों की तरह रोई में मत सत्यवादी बनिए के लिये स्त्री, पुत्र, धारीरूपन आदि तृण के समान हैं।

(14) (सुमन के आने पर) सुमुख सुमनजी राजा साहब की बात भरनी नहीं काशी हो वे राग-2 कहते हुये सैवरा धिरे हो कुछ कारण नहीं मालूम है। आप राम को पुस्तक पुता लाइये फिर सब वहाँ छुड़िये।

(15) (राम के आने पर) राजा के चिन्ता का सम्पूर्ण कारण यह है कि ये पुत्र पर विशेष स्नेह करते हैं। इन्होंने हमें दो वरदान देने का वचन दिया था, मैं अपनी स्त्री के अनुसार दो वर माँग लिया, ~~जिसे~~ भरा का राजा तिलक व तुम्हारे लिये चोकर वर का वनवास, जिसे सुनकर इन्हें इतनी चिन्ता उड़ गई।

सुत सनेह इत वचन उत, संकट परे उ नरेश सकहुँ ह आयसु चरहुँ मिर, मेरहुँ कहि कहै।  
हे राम तुम्हारी माँ भरा भी शपथ पूर्वक कहती है। राजा की चिन्ता का कारण, दूसरा मैं नहीं समझती हूँ। तब कभी किसी भी हाथ में, अपराध न करने वालों ने



निवादि भातु पिता गुरुज्यो, सेवा करै वारे हो  
उत राजा को समझाहि हित, हे रामच-दूतुम वार करौ  
जिससे को इससे वृद्धावस्था में, अधमन हो वह पुत्र कावको  
जिसको इसको वृद्धावस्था में, अधमन हो वह काम करौ

(17)

(भुनिमो का वस्त्रवर्णादि देना)

राम पुत्र इसे पाणों से कपिक लमावे हो चोहे इनको  
सब कुहनल हो जाय, या इसे नरक में जाना पड़े फिर  
भी मे पुत्र वन जाने को नहीं कहेंगे, ये लो भुनिमो के  
वस्त्र रखै है। पुत्र जो अच्छा लगे हो करे।

(~~विशेष~~) उर्ध्वला

१- शब्द हे प्रणेश्वर प्रस्थान करो श्री श्चुराङ्की सेवा में  
जाकर निज जीवन सफल करो भाइ भाभी की सेवा में  
मे खुश हूँ जब ये देखो हूँ पोशाक साफ़ की पहने हो  
जब वन जाने को हो तब तक तो यहाँ किसीलिये रखे हो  
२- शब्द जिसके इसमें साथ जो सेवा करे जाय  
सेवक का कब चम है पत्नी को ले जाय  
शब्द यदि मुझे साथ में लोगे तो वरुण में वाधा आयेगी  
हो गया जो मेरा मोह प्रबल हो सब सेवा छुट जायेगी  
इसलिये साथ जावो, मैं जी लूँगी चौदह वर्षों तक  
यह भूति आपकी वकरी है पूज्य चौदह वर्षों तक

३- वार्ता हे नाथ आप अपने भाभी भाई की सेवा करने के लिये  
जा रहे हैं। इसलिये मैं आप को पाँच कृत्य कृत्य  
हो गयी

४- जावो नाथ